ओम शांति,

तो आज हम चर्चा करेंगे हम जन्म जन्म के लिए अपने हाथों में कौनसे खजाने जमा करें? तिन खाते बताए बाबा ने और बहोत सारे खजाने हमारे पास है और इन खजानो को जमा करने का आधार भी बताया। तो सभी अपने को देखते हुए बहोत अच्छा चिंतन भी करेंगे और अपना चित्र भी बनाएंगे। सब से पहले हम चलें याद होगा जिन्होंने मुरली सुनी है बाबा ने कहा स्वयं श्रेस्ठ संकल्प के द्वारा चित्रकार बन कर अपना चित्र बनाओ, जिस चित्र में तिलक, ताज और तख़्त हो। तिलक श्रेस्ठ स्मृतियों का, श्रेस्ठ स्मृतियाँ है हमारे श्रेस्ठ स्वमान, कौन है हम? **बाबा ने यह याद दिलाया तुम विशेष आत्माएं कल्प वृक्ष कि जड़ो में बैठे हुए सभी धर्मो कि आत्माओ के पूर्वज हो, पालन करने वाले हो** इस स्वमान में आजायें। यह स्मृति का तिलक है, तुम्हारे सर पर डबल ताज है, संसार में और राजाओ को इसका ज्ञान ही नहीं, डबल ताज और तख़्त कौनसा दिया है बाबा ने? बाबा के दिल पर बिराजमान हो, बाबा के दिलतख्तनशीन हो।

तो एक चित्र बनाएं हम बहोत अच्छा, विचार करें इस चीज को स्वीकार करेंगे सभी भगवान् मुझे बहोत प्यार करता है, करता है या नहीं? सचमुच बहोत प्यार करता है इसलिए उसने कहा तुम मेरे दिल में हो। देखो भक्त कहते है भगवान् हमारे दिल में बैठा है और भगवान् कहता है तुम मेरे दिल में हो इसका सहज अर्थ यह है जो हमें नशा हो जाना चाहिए भगवान् मुझे बहोत प्यार करता है और मुझे इतना योग्य बना देना चाहता है कि चारो युगो में हम भरपूर रहे किसी के आगे भी हाथ ना फैलाना पड़े, ना स्थूल धन के लिए, ना सुख शांति के लिए। ऐसा देखना चाहता है वोह। बाबा के बहोत अच्छे शब्द थे मेरे बच्चे और दुखी? आप के बच्चे भी यदि दुखी हो तो माबाप को कैसा लगेगा? कि सुब कुछ करके भी इनका दुःख हरले, **भगवान् को भी यह पसंद नहीं कि मेरे बच्चे और साधारण रेह जाएँ, मेरे बच्चे और शांति कि तलाश में इधर उधर घूमने लगे, वोह चाहता है कि मेरे बच्चे दाता बन जाएँ। इतने संपन्न हो जाएँ, इतने भरपूर हो जाएँ कि सारे संसार को देने वाले हो तब तो उसको भी गर्व होगा ना?**

कैसा बाबा ने कहा? कितनी सुंदर भाषा है बाबा कि, कितना सुंदर फिलिंग है कि केवल हम सब जान सकते है बाबा ने कहा बाप को तो गर्व है नशा है कि मेरा हर बच्चा राजा बेटा है। भगवान् जिनपे गर्व करता हो वोह कैसे होंगे? हमें भी अपने को इतना योग्य बना देना है कि भगवान् भी हम पर गर्व करें और सारा संसार भी हम पर गर्व करें, थिक है? सारे संसार के पालन करने वाले हम बन जाएँ तो इस स्वमान से हम शुरू करेंगे और आप सभी जब तक यहाँ है इस स्वमान को बहोत पक्का कर दें बाबा ने कहा - **तुम बाबा के गले कि माला के ऐसे मनके हो जिनकी याद से अनेक भक्तो कि समस्याएं भी दूर हो जाती है।** समजे हम सभी अपने महत्व को, अपने इस गौरव को, अपनी शक्तियों को हमें याद करके अनेक भक्त दुखो से मुक्त हो रहे है, हमें याद करके अनेक भक्तो को शांति मिल रही है, हम कैसे होंगे? तो यह नशा रखेंगे सभी इस बार यहाँ रहते हुए में बाबा के गले कि माला का ऐसा मोती हूँ जिसकी याद से भक्तो के भी बिगड़े काम संवर जाते है। तो हमारे पास समस्याएं कहाँ रेह सकती है? हम केवल अपने स्वमान में रहे समस्याएं हम से दूर भाग जाएंगी, पसंद है ना?

में भी बहार जाता हूँ तो बहने जहाँ उस शहर में बड़ा मंदिर होता है तो ले जाती है तो में हमेश एक चीज देख कर बहोत सुखद फिलिंग करता हूँ, कि देखो काम किसने किया, हम सब ने काम किया ना? भगवान् को साथ दिया, अपना जीवन पवित्र बनाया तो हमारी पूजा होने लगी। काम हम सब ने किया और? इतने हजारो पंडितो का, ब्रह्मणो कि आजीविका चल रही है, इतना धन माल मिल रहा है उन्हें, तो जिन्होंने काम किया वोह कितने संपन्न होंगे? सोचने कि बात है। हम सभी अपने इस महान स्वमान को पहचानते हुए इसकी स्मृति में रहा करें। तो हमारा वही स्वरुप बन जाएगा और स्वतः ही विघ्न और समस्याएं हमें छोड़ के चले जायेंगे बल्कि हमें तो इतना शक्तिशाली बनना है आप सब को भी में याद दिलाना चाहता हूँ बाबा कि यह बात आने वाले समय में तुम्हे सारे संसार के विघ्नो को हरना होगा।

विनाश काल छोटा मोटा काल नहीं होगा बहोत भयानक काल होगा, जिसमें यह संसार हर मनुष्य विघ्नो से पूरी तरह से ट्रस्ट हो जाएगा, घिर जाएगा। हमें संसार के विघ्नो को हरना होगा तभी तो हम विघ्न विनाशक कहलायेंगे अपने को तैयार करेंगे इन दोनों स्मृतियों के द्वारा कि में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ और विघ्न विनाशक हूँ। **हम अभी से अपने और दूसरे के विघ्नो को हरने के अनुभव करें, अभी से शुरू करें ताकि हमें अपने में भी विश्वास हो जाए कि हम दृस्टि देकर, हम संकल्प करके, हम सकास देकर दुसरो को विघ्नो से मुक्त कर सकते है**, करेंगे अपने को सभी तैयार? बहोत बड़ा काम हम सब के सामने आ रहा है। में हमेशा सोचता हूँ कि हम केवल अपने लिए जिए या हम अपने को तैयार करें कि हम संसार के लिए जियेंगे? हम संसार के काम आजायें, भगवान् के काम आजायें और उसके संसार के काम आजायें तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा, थिक है ना यह बात? अपने को तैयार करें कि हम अपनी शक्तियों को इतना बढ़ाएं, अपने स्वमान को इतना ऊँचा उठाएं, अपनी भावनाओ को इतना शुद्ध करें कि हम से निकली हुई किरणे, हम से फैलती हुई सकास आत्माओ को बहोत कुछ दे सकें।

तो बैंक खोला है भगवान् ने, सभी ने खाते खोले है? किस किस ने खोले है खाते उस बैंक में? अच्छा सोच रहे है कोई कोई तो, माताओ ने सभी ने खोला नहीं? सब खोल दो खाते, **तिन खाते खोलने है अपने श्रेस्ठ पुरुषार्थ का खाता, दूसरा खाता दुआओं का खाता, तीसरा खाता पुण्य कर्मो का खाता।** इन तीनो खातो में हमें खजाने जमा करने है। में आपको गिना दूंगा नौ खजाने हमें जमा करने है। भारत वर्ष में आठ सिद्धियाँ, नौ निधियां इनका गायन है। आठ सिद्धि सब से बड़ी, नौ खजाने निधियां हम बाबा से सिद्धियाँ भी प्राप्त कर रहे है, केवल प्राप्त ही नहीं कर रहे है हम तो सिद्धि दाता बन जाते है सिद्धि देने वाले और खजाने जमा कर रहे है। तो अपने पुरुषार्थ का खाता खोलेंगे, हर तरह का पुरुषार्थ ज्ञान का, योग का और धारणाओ का तीनो जो हमारे सब्जेक्ट है इनमें हम श्रेस्ठ पुरुषार्थ करते हुए जमा करेंगे। नौ खजाने जब हम गिनेंगे उसमें से आप चुन सकते है कौनसा खजाना किस खाते में जमा होगा। जो भी बाबा कि श्रीमत है मुरली सुनने से लेकर सवेरे उठकर अच्छा योग करना और सारा दिन क्या क्या पुरुषार्थ करना है जीवन में उसको करते हुए हम अपने खजानो को बढ़ाएंगे। हम सब जानते है एक इम्पोर्टेन्ट चीज हमें अपनी बुद्धि में समां देनी चाहिए कि यदि हमें कुछ पाना है तो साधनाएं करनी ही पड़ेंगी, या बिना साधनाओ के मिल जाएगा? बिना तपस्या किये हम खाली रेह जायेंगे।

आज आप देखलो आपके घरो में आपके बच्चे किसी कोर्स को करने के लिए कितनी मेहनत करते है? पहले तो डिग्री करेंगे बीस बीस साल पढाई में मेहनत करते जो बच्चे होसियार है जो अपने भविष्य को उज्वल बनाना चाहते है आप सब देख रहे होंगे अपने घरो में वोह टीवी देखना भी छोड़ देते है, घूमना फिरना भी छोड़ देते है केवल तैयारी तब तो कुछ मिलता है ना? जो बच्चे ऐसा नहीं करते उनका भविष्य साधारण रेह जाता है उनको छोटी छोटी नौकरियां करनी पड़ती है।

हम सब भी अपने चित में यह बात अच्छी तरह समां लें कि **अगर हमें संगमयुग पर संतुष्ट होना है तो तपस्या करनी ही पड़ेगी।** कई आत्माएं केवल तपस्या कि चर्चाओ में रहते है हमारे जीवन में यह समस्या है, यह है यह है जैसे एक बहोत अच्छी कहावत है कि अँधेरे को कोशने से तुम्हे क्या मिलेगा? दीपक जलाओ, थिक है ना? बहोत अँधेरा है ठोकर लग रही है कुछ नहीं दीखता है यह कहने से कुछ होगा? लाइट जलाओ। समस्याएं है समस्याएं है यह गायन करने से कुछ मिलेगा नहीं तपस्या करें तो तपस्या के सामने समस्याएं ठहरती नहीं है। बहोत अच्छा महावाक्य था पीछे जो बच्चे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके पास आ नहीं सकती। कितनी अच्छी बात है सभी भाई बहने इन सूक्ष्म राहश्यों को समज लें दूसरा रहष्य जो बाबा ने बता दिया है **तुम्हारी स्थिति श्रेस्ठ होगी तो परिस्थियां स्वतः ही बदल जायेगी।** चार पांच शब्दो में सारे संसार का, चारो युगो का सर्व श्रेस्ठ रहष्य समां गया कैसी

स्थिति वैसी परिस्थिति। चार शब्द है केवल चारो युगो का रहष्य आ गया अगर हम परिस्थियों को समाप्त करना चाहता है तो श्रेस्ठ स्थिति के बल से, पुरुषार्थ के द्वारा हम अपने खाता जमा करें। फिर में रिपीट कर रहा हूँ सभी अपने को तैयार करें सिंपल शब्द अपने पास रख लें कुछ पाना है भगवान् से तो कुछ करना है। सिंपल सी बात है और **अपने को दृढ़ कर दें कि हमें करना है, हम नहीं करेंगे तो क्या वोह भक्त करेंगे जिन्हे कुछ भी पता नहीं है?** हमारे पास सम्पूर्ण ज्ञान सपस्ट है, विधि का ज्ञान है, सरल विधि, कुछ कनफूजन नहीं है कि यहाँ जाने से अच्छा मिलेगा या वहाँ जाने से? इस तीर्थ पर कुछ मिलेगा या उस तीर्थ पर यह सब नहीं है। भगवान् सामने है मदद कर रहा है उसने केह दिया है तुम एक कदम बढ़ाओ तो में हजार कदम बढ़ाऊंगा। अर्थात तुम जरा सी हिम्मत करो मेरी और से हजार गुना मदद आजायेगी। इतना सब होते भी हम ना करें तो? यह बहोत बड़ी कमजोरी हो जायेगी। हमें करना है।

दूसरा खाता हमारा है **दुआओं का** खाता। बाबा ने तो एक ही बात कही कि संतुष्ट करना। यह नहीं कहा संतुष्ट रहना पर जो संतुष्ट रहेंगे वही संतुष्ट करेंगे, जो स्वयं संतुष्ट नहीं है वोह दुसरो को संतुष्ट नहीं कर सकते। घरो में भी येही स्थिति है। दुआएं हमें मिलेगी दुसरो को सुख देने से, दुआएं हमें मिलेगी असहाय को सहायता करने से, ऐसे ही मिलेगी ना? दुआएं हमें मिलेगी जिनका कोई नहीं है उनके हम हो जाएँ तो बहोत दुआएं मिलेगी और यह दुआएं हमारे मार्ग को सरल करती है। क्यों जरुरी है दुआएं? ध्यान दें पिछले साल से बाबा दुआओं पर विशेष जोर दे रहे है बहोत ध्यान दिलवाया दुआओं लो, क्यूँ? जिस मनुष्य के साथ दुसरो कि बहोत दुआएं है अगर उसके जीवन में भयानक बीमारी आजायें तो सहज निकल जाती है। **जिसके पास दुआओं का खाता जमा है उसके जीवन में यदि समस्यायों के पहाड़ भी गिर जाएँ तो उन्हें चोट नहीं लगती सहज समाप्त हो जाती है।** जिनके पास दुआएं नहीं है वोह ऐसे ही गिर जायेंगे ना यहीं सीडी से तो हड्डी टूट जाएंगी, कहेंगे दोनों पैरो में दो दो फ्रेक्चर हो गए। और कुछ लोग ऐसे एरोप्लेन से भी गिर गए तो जिंदे रेह गए सुनी होगी आपने कहानियां।

पुण्य और दुआओं का प्रभाव। बहोत बड़ी शक्ति है दुआओं में इसलिए बददुआएं तो हमें देनी नहीं है और दुआएं बहोत देनी है। अगर कोई बददुआएं देंगे दुसरो को, क्या है बददुआएं? दूसरे के बारें में बुरा सोचना, किसीसे बदला लेने कि भावना रखना, किसी को कष्ट पहोंचा देना तो दुआओं का खाता ख़त्म होता जाएगा। तो माया को जितने में और इस जीवन में सफलता पाने में दुआएं बहोत बहोत मदद करती है इसलिए सभी को यह खाता खोल कर संतुष्ट करते हुए खजाने जमा करते चलना है। हमारे खजाने सूक्ष्म है बाबा बहोत अच्छी बात कहते आयें तुमने यहाँ बहोत दुआएं दी है इसका प्रूफ है कि भक्ति मार्ग में क्या हो रहा है? बोलो? देवियाँ बोलेंगे? क्या कर रही है आपकी पत्थर कि मूर्तियां? भक्तो को दुआएं दे रही है। इसलिए सारा संसार चला, चार युग बीते पहले दो युग तो दुआओं कि आवश्यकता नहीं भक्ति द्वापरयुग से पत्थर कि मूर्तियों से दुआएं मिलने लगी **हम जानते है यदि भक्ति ना होती तो संसार वीरान बन जाता है, जंगल बन जाता है पूरा, भक्ति ने बहोत कुछ सिखाया है मनुष्य को पाप कर्मो से बचाया है, अशांत व्यक्ति को शांति दी सुख दिया।** तो देखो दुआएं मिलती रही हमारा वर्त्तमान दुआओं देने का प्रभाव दो युग तक संसार को दुआएं दिलाने वाला बन गया तो बड़े महत्व कि बात है हम मन से भी दुआएं दें, मुख से भी दें, कर्मो के द्वारा संतुष्ट भी करें दुआएं मिलती रहेगी। हमें देते चलना है और लेने के लिए श्रेस्ठ कर्म करने है, संतुष्ट करना है सब को।

तीसरा खाता **पुण्य कर्मो का** खोल देना है। सब ने खोल दिया है सब से बड़ा पुण्य याद करें? सब से बड़ा पुण्य पवित्र बनना और बनाना। यदि आप एक मनुष्य को भी पवित्र बनाते है तो पुण्यों का खाता सर्व श्रेस्ठ, भक्ति में जिस चीज का किसी को ज्ञान नहीं है, शास्त्रो में जिसकी चर्चाएं नहीं है पवित्र बनाना। बाबा ने हम सब को पुण्य का बहोत बड़ा मार्ग दिखा दिया है सेवाओं के क्षेत्र में, कर्म के क्षेत्र में ग्रहस्त में रहते हुए भी कर्म निस्वार्थ भाव से करना, सेवाएं निस्काम भाव से करना, बेहद कि वृत्ति से करना, अच्छी भावनाओ से करना, भाव भावनाएं बाबा ने यह शब्द बोला

बेहद कि वृत्ति और निस्वार्थ स्थिति इससे पुण्य बहोत जमा हो जाते है। हमने यज्ञ में सेवा भी की, उदाहरण ले लें **किसी ने तन सेवा कि हो या धन से सेवा कि हो लेकिन सेवा करने के साथ कोई कामना रही हो मेरा नाम हो जाएँ, लोग मुझे सब जान जाएँ इस स्वार्थ से पुण्य नष्ट हो जाता है। बेहद कि वृति नहीं रखी सेवाओं में यह मेरा है, मेरेपन कि वृति से सेवा कि तो भी पुण्य नष्ट हो जाता है।**

ग्रहस्त में रहने वाले बहोत अच्छा ध्यान दें, ग्रहस्त में रहने वाले को तो परिवार के प्रति मेरापन रहता है, रहता है या नहीं? रहता ही है। इससे जरा ऊपर उठेंगे कि यह मेरा परिवार केवल इतना नहीं सारा संसार भी मेरा परिवार है केवल यह भावना अपने में पैदा करों। सभी माताएं यह बहोत ध्यान दें परिवार में जो कर्म आप करती है वोह परमातम अर्थ करने लगो, यज्ञ अर्थ करने लगो, समर्पण भाव से करने लगो आपका घर में किया गया काम पुण्यों का खाता जमा कराएगा। समज रही है बहने? घर आपका है, परिवार आपका है लेकिन आप यह भावना बढ़ा दो यह परिवार बाबा का है, यह घर बाबा का यज्ञ है और हम उसके यज्ञ में सेवा कर रहे है देखो आपके कर्म आपको बंधन में डालने वाले नहीं होंगे। अन्यथा कर्म मनुष्य को बंधन में डाल रहा है, भाई लोग भी ध्यान दें आप अपने परिवार के लिए कमा रहे है वोह तो कामना है परन्तु आपको यदि केवल यह फिलिंग रहती है यह मेरे परिवार के लिए है तो आपके यह कर्म आपको बंधन में डालने वाले होंगे, खींचेंगे यह आपको, कर्म बंधन बढ़ता जाएगा। लेकिन यदि आप यह भावना बिलकुल स्ट्रांगलि अपने अंदर समां लें यह परिवार बाबा का यज्ञ है हम सब कर्म बाबा के लिए कर रह है। कमा भी रहे है तो किसके लिए? बाबा के लिए बहोत सुंदर संकल्प है यह, हमारा हर कर्म तुम्हारे लिए संकल्प करें समर्पण भाव इसे कहते है। हमारी हर चीज तुम्हारे लिए, हमारे कर्म भी तुम्हारे लिए, हमारी धन सम्पन्ति भी तुम्हारे लिए, केह सकते है या नहीं? भक्ति में तो गाते आयें ना? तन मन धन सब तेरा पर घर में आके वापिस? तन मन धन सब मेरा बदलते रहते थे रोज। अब यह संकल्प कर लें सब कुछ तेरे लिए जैसे हम कहते है ना? कि में बाबा का बाबा मेरा। बाबा ने मुरली में कहा इससे जोड़ दें मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए, मेरा जीवन तुम्हारे लिए। एक ही बार तो ऐसा समय मिलता है जहाँ हम यह भावना, यह प्यार परमातम अर्थ अर्पण कर सकते है मेरा सब कुछ तेरे लिए। रूह रिहान करके देखो बाबा से रोज बहोत आनंद आएगा आपको फिल होने लगेगा मेरी समस्याएं भी तेरी, मेरे दुःख दर्द, मेरे शरीर के कष्ट तेरे तुरंत हल होने लगेंगे। यह अच्छे अनुभव सभी करने है।

तो पुण्य कर्म सभी जानते है सुख देना पुण्य कर्म है। पुण्य कर्म करने का तुरंत परिणाम आता है, एक व्यक्ति प्यासा हो और हम उसे पानी का ग्लास देदे तो हमें सुख मिलता है, पिने वाले को तो सुख मिलेगा ही लेकिन देने वाले को बहोत सुख मिलेगा। अनुभव होगा सभी को इसलिए भक्ति में दान का बहोत बड़ा महत्व रख दिया गया। हर व्यक्ति के लिए हिन्दू धर्म में तो नियम ही था अपनी सम्पन्ति का अपनी कमाई का दस परसेंट धर्म के कार्यो में लगाओं क्यूँ कि उससे सच्चा सुख मिल रहा था। धर्म भी जीवित रहा, धर्म भी पालना करने में धन सम्पति कि मदद रही और देने वालों को धर्म का बल मिलता रहा। लोग सोचते है कि यह सब क्यूँ कर दिया धर्मो में? लेकिन इसकी बहोत आवश्यकता थी धर्मो में और उससे भी हम सब कुछ परमातम अर्थ करने लगे। पुण्यो का खाता सभी बढ़ाएंगे, पुण्य भी मनुष्य को समय पर काम आते है, में तो देखता हूँ प्रैक्टिकल अनुभवों से पुण्य मनुष्य के सच्चे मित्र है। धन साथ छोड़ जाएगा, सम्बन्धी भी साथ छोड़ जाते है, हमारा अपना शरीर भी साथ नहीं देता पर पुण्य कर्म किसी का साथ नहीं छोड़ते। सभी इस खाते को बढ़ाएंगे और याद रखेंगे इन खजानो को बढ़ाने का आधार निमित भाव और निर्माण चित कि स्थिति, निरहंकारीता निमित भाव।

हमें बहोत अच्छी तरह एक चीज समज लेनी है सभी इसको अनुभव में लायेंगे अपने जीवन में हमारे साथ परमातम शक्तियां काम कर रही है, हमारी अपनी शक्तियां काम नहीं कर रही। में अगर यहाँ बोल रहा हूँ तो मेरे साथ परमातम

शक्तियां काम कर रही है तब तो हम बोल पा रहे है नहीं तो नहीं हो सकता। पांडवों कि गाथाओं में एक बहोत अच्छा चित्रण है, एक बहोत अच्छा आभास हो गया कि तुम्हारे साथ परमातम शक्तियां काम कर रही थी इसलिए तुम बहादुर थे, श्रीकृष्ण के चले जाने के बाद उन्हें लगा हमारे पास कुछ नहीं है। हम में से भी यदि कोई सोचें कि हम यहाँ इतना अच्छा काम कर रहे है बहार जाके भी कर सकते है, बाबा को छोड़के भी तो कर सकते है, नहीं कर पाएंगे क्यूंकि यहाँ परमातम शक्तियां हम से जुड़ चुकी है इसका फायदा उठाएंगे इसको कहेंगे निमित भाव। में ही कर रही हूँ, मेने यह काम किया एक छोटा सा संकल्प भाई बहने अपने जीवन से हटाएं, माताओं को यह संकल्प रेह सकता है में घर कि मालिक हूँ, में घर कि बड़ी हूँ बड़ा नेचुरल संकल्प है कोई ख़राब बात नहीं है मालिक तो आप ही है और आप ही रहेंगे लेकिन अब बाबा को मालिक बना दो। में निमित हूँ, भाई लोग को यह संकल्प रहना नेचुरल है में कमाता हूँ, किसी को यह संकल्प भी रेह सकता है में ना कमाऊं तो इनका क्या होगा? और यह फिलिंग रहती है अपने बच्चो के लिए मेने कमा कर तुम्हे पढ़ाया लिखाया बड़ा किया यह यह किया। यह फिलिंग आत्मा को कष्ट देती है, जब बुजुर्ग हो जाते है बच्चे माबाप पे ध्यान नहीं देते तो माबाप यह सोच सोच के दुखी रहते है हमने इन बच्चो के लिए इतना कुछ किया इन बच्चो ने हमारे लिए कुछ नहीं किया यह सोचने कि आवश्यकता नहीं। आपने अपने बच्चो के लिए कुछ नहीं किया, थिक कहता हूँ में या नहीं? क्या किया केवल फ़र्ज़ निभाया है, जो आत्मा ने आपके घर में जन्म लिया है वोह अपना भाग्य लेकर आयी है ना जाने किस आत्मा ने किस अच्छी आत्मा ने आपके घर में जन्म ले लिया हो उसकी उपस्थिति से आप धन धान से संपन्न हो गए हो कभी कभी ना जाने कौन बुरी आत्मा घर में जन्म ले लेती है उसके जन्म लेते ही सब काम बिगड़ जाते है। हम कौन है करने वाले? हम निमित है केवल। इसलिए निमित और निर्माण चित, निरहंकारी। हम सब को अच्छी तरह ध्यान देना है ज्ञान योग के मार्ग पर चलते हुए यदि किसी में और मेरेपन को सूक्ष्म रूप से पहचान कर ना छोड़ा तो उसका ज्ञान योग बहोत सार्थक मन नहीं जाता। हमारी इस रूहानियत का, आध्यात्मक का, हमारी तपस्याओं का महत्व पूर्ण सार है ही मेपन का त्याग, मेरेपन का त्याग। **में को स्वमान में बदल दें, मेरे को तेरे में बदल दें सिर्फ कहने से काम नहीं होता बहोत सूक्ष्म फिलिंग हो जाएँ हमें सब कुछ तेरा।**

अब हमारे पास नौ खजाने है गिन लें सभी

1) पहला खजाना- ज्ञान का खजाना,
2) दूसरा गुणो का खजाना,
3) तीसरा शक्तियों का खजाना,
4) चौथा- खुशियों का खजाना,
5) पांचवा संकल्पो का खजाना,
6) छठा समय का खजाना,
7) सातवां दुआओं का खजाना,
8) आठवां पवित्रता का खजाना जिसमें सुख शांति दोनों आती है और
9) नौवां हो गया पुण्य कर्मो, श्रेस्ठ कर्मो का खजाना।

आप सभी ने जो खाते खोले है उसमें यह सब खजाने जमा करने है में आप सभी को एक बहोत सुंदर संकल्प देना चाहता हूँ ध्यान से सुनेंगे बाबा ने हम सभी को एक संकल्प दिया है कि **इन खजानो का प्रभाव पुरे ८४ जन्मो पर रहेगा। पहले दो युग यहाँ के पुरुषार्थ कि प्रारब्ध हमें मिलेगी बाद के दो युग यहीं संस्कार जो हमने यहाँ बना लिया है प्रैक्टिकल में चलते रहेंगे।** सतयुग त्रेता में इन संस्कारों कि जरुरत नहीं होगी जिसने इस समय अपने को संतुष्ट कर लिया पिछले दो युग भी वोह हर जन्म में संतुष्ट रहेंगे। जिसने अपने जीवन यहाँ ईश्वरीय सुखो से भर दिया पिछले दो युग

अति काल में वोह आत्माएं सुख ही महसूस करेंगी, दुःख आते ही दुखो से पीड़ित नहीं होगी।
तो भाग्य बनाने का सुंदर समय चल रहा है। एक सुंदर सा लक्ष्य सभी ले लें यह समय भाग्य बनाने का है और हमारे हाथ में है अब, हम भाग्य के हाथ में नहीं है बाकी चारो युग हम भाग्य के हाथ में रहेंगे पर संगमयुगपर भाग्य कि कलम हमारे हाथ में है यह बहोत सुंदर रहष्य हो गया। यह संसार में किसी भी विद्वान और आचार्य के समय में नहीं आया था भाग्य पुरुषार्थ प्रालब्ध कौन किसके वश है, कौन बड़ा कौन छोटा यह भी सपस्ट कर दिया बाबा ने अब भाग्य तुम्हारे हाथ में पुरे चारो युग तुम भाग्य के हाथ में। अब भाग्य बनाने का समय, बिज डाल ने का समय है सभी संकल्प करें हम परमातम मिलन के इन दिनों को कैसे व्यतीत कर रहे है? प्रभु मिलन का आनंद लेने का समय है, इन दिनों को हम कैसे बिता रहे है? उलझनो में, समसस्याओं में, टकराव में या परम आनंद में। सभी अपने से बातें करें अब यह सब कुछ हमारे हाथ में है कुछ चीजे छोड़ कर हम अपने जीवन को सुखो का भंडार बना सकते है अगर आप अच्छी तरह अपने को देख लें मेरे पास बहोत भाई बहने आते है दिखाई देता है कि **संगमयुग पर जिस आत्मा ने अपने चित को शांत कर लिया वोह सब से अधिक बुद्धिमान और जिनका चित उखड़ता रहा, चिड़चिड़ापन रहा, दुसरो को देखने में रहा, यह ऐसा कर रहे है इन्होने मेरे से ऐसा किया, इन्होने मुझे ऐसे किया इन्होने मुझे बहोत दुःख दिया, इन्होने मुझे बहोत तंग किया है वोह सब इस संगमयुग के काल को भी दुखो में व्यतीत कर रहे है।** बहार निकल जाएँ सभी इससे। जिसने भी हमारे साथ जो कुछ भी किया हो अब उन्हें क्षमा दे दो, क्षमादान दो उन्हें, अब परमातम छत्र छाया में आने का समय है, पसंद है सभी को? पास्ट में नहीं जीना है।
तो में जो आपको एक अच्छा संकल्प दे रहा था वोह यह है रोज सवेरे उठ कर या कभी भी क्यूंकि जब हम सवेरे उठने कि बात कहते है तो कई तो तत्काल रिजेक्ट कर देंगे हम तो सवेरे उठते नहीं छोड़ दो इस चीज को। आप जब भी उठे तभी ना उठे तो छे बजे और देर से उठे तो आठ बजे, ना उठे तो रात को तो जागेंगे? एक चिंतन करेंगे में अपने सभी जन्मो को कैसा देखना चाहता हूँ? सभी माताएं अच्छी तरह चिंतन करें हमारा हर जन्म ऐसा हो, कैसा? सोचो। अनेक जन्म, अनेक बार हमारे सर पर ताज रख दिया जाएँ, कितना अच्छा होगा? चाहते है सभी? या ताज बहोत भारी है कौन परेशान होगा, ताज से अपना सीधा सादा जीवन ही सहज और अच्छा है। हमारा हर जन्म तन मन धन के सुखो से संपन्न हो, हमारे पास हर जन्म सुंदर श्रेस्ठ सद्बुद्धि हो, चाहते है सभी? हर जन्म में हम दाता बन कर रहे हाथ फ़ैलाने वाले ना हो, सोचो चाहेंगे सभी यह? हमारे हर जन्म में कोई भी हमारे द्वार पर आजायें तो खाली ना जाएं हम सुखो का दान करने वाले हो, हम हर जन्म में धर्म को बल देने वाले हो, हमारा जीवन हर जन्म में चरित्र से संपन्न हो, श्रेस्ठ चरित्र के द्वारा हम दुसरो को प्रेरणा देने वाले हो, हर जन्म में हमें जो परिवार मिले उसमें क्या हो? सम्बन्धो में अति प्यार हो। आज भी हम देखते है ना? सम्बन्धो में प्यार नहीं तो जीवन बिलकुल बेकार लगता है, क्या करेंगे इसके लिए?
अब यह नौ खजाने है हमारे पास एक एक का चिंतन करें।

- **ज्ञान का खजाना** - ज्ञान दान से, ज्ञान चिंतन से, ज्ञान सुनने से, ज्ञान के अध्यन से बढ़ता है। थिक है? मुरली सुनेंगे, स्टडी करेंगे ज्ञान दान करेंगे, ज्ञान का चिंतन करेंगे तो यह खजाना बढ़ेगा। और जिसका यह खजाना बढ़ गया, ज्ञान से हमें प्राप्त होता है विवेक, बुद्धि उससे हर जन्म सुंदर बुद्धि प्राप्त होगी। **जिसने ज्ञान धन बहोत दान किया है उसे स्थूल धन कि कोई कमी नहीं रहेगी।** लोग आपसे राय लेने आया करेंगे द्वापरयुग के बाद भी अगर आपने बहोत ज्ञान धन का दान किया है, करेंगे? बहोत अच्छा एक महावाक्य है **जिसके पास ज्ञान धन बहोत है उसे स्थूल धन कमाने में मेहनत नहीं लगती।** नोट करें सभी भाई लोग जिसके पास ज्ञान धन बहोत है स्थूल धन सहज प्राप्त होता है, बढ़ाएंगे इस धन को ज्ञान से जीवन में चमक आती है, ज्ञान से

हमारी खोज समाप्त हो गयी है, हमारी भटकन समाप्त हो गई है, हम कुछ ढूंढ नहीं रहे है ऐसा श्रेस्ठ ज्ञान हमारे चिंतन में आजायें, हम उस चिंतन का सुख लेने लगें तो ज्ञान शक्ति बन जाता है। यदि हमें सम्बन्धो में बहोत प्यार चाहिए जन्म जन्म तो क्या करेंगे? क्या करेंगे? यहाँ परमातम प्यार में मग्न रहेंगे। **जिसने भगवान् से बहोत प्यार किया उसे जन्म जन्म प्यार मिलेगा, जिसने उसकी रचना से प्यार किया, सभी आत्माओ से प्यार किया उससे जन्म जन्म सम्बन्धो में प्यार प्राप्त होगा।**

- **गुणो का खजाना बढ़ाएंगे तो गुणवान रहेंगे हर जन्म।**
- **शक्तियों का खजाना बढ़ाएंगे तो ताज मिलेगा।** शक्ति माना पॉवर, सत्ता हाथ में आजायेगी और **जिनके पास शक्तियां ज्यादा होगी वोह हर जन्म में निर्भय भी रहेंगे, दुसरो को बल देने वाले होंगे।** सभी को शक्तियां बढ़ानी है, कैसे बढ़ेंगी शक्तियां? कैसे बढ़ेंगी? सर्व शक्तिवान से बुद्धियोग लगाने से विशेष रूप से जब हम योग अभ्यास करें में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ और बाबा है सर्व शक्तिवान उसकी शक्तियां लेना इस अभ्यास से हमारी शक्तियां बढ़ती जायेगी। पवित्रता से शक्ति बढ़ेगी, ज्ञान चिंतन से शक्ति बढ़ेगी, शक्तिशाली संकल्प करने से शक्ति बढ़ेगी इनको हम आधार बनाएंगे अपनी शक्तियां बढ़ाने के।
- **पुण्यो कर्मो का खाजा जमा करेंगे बहोत तो द्वापरयुग के बाद भी हम पुण्य करते रहेंगे क्यूंकि वोह संस्कार हमारे अंदर पड़ जाएगा।**
- **हम अपने बोल को यदि यहाँ सुंदर बनाएंगे तो द्वापरयुग से भी अच्छी भाषा बोलेंगे, हमारी भाषा का प्रभाव रहेगा, हमारी भाषा दुसरो के लिए प्रेरक बनी रहेगी।**

सभी समज लें हमें द्वापरयुग के बाद भी बड़े बड़े काम करने है। द्वापरयुग से भी हम संसार के काम आयेंगे, संसार को ज्ञान भी चाहियेगा, बहोत कुछ सीखना पड़ता है मनुष्य को, सीखने वाली आत्माएं वही होंगी जिन्होंने यहाँ बाबा से बहोत कुछ सिख लिया है। तो सभी खजाने जमा करेंगे ना?

- **समय का खजाना। इसको जमा करने का अर्थ है समय को सफल करना जिसके लिए बाबा ने कहा तुम्हारा एक मिनट एक वर्ष के बराबर है।** समय को सफल करना माना समय का खजाना जमा करना तो अनुभव होता रहेगा कि थिक समय पर सफलता प्राप्त होगी किसी भी जन्म में समय धोखा नहीं देगा। बहोत सुंदर बात रहेगी यह, बहुतो को अनुभव रहता है जीवन में कि समय ने धोखा दे दिया सब कुछ थिक थिक था समय पर आकर सब खेल बिगड़ गया। जिन्होंने समय को सफल किया समय उनके जीवन को सफल करेगा, सफलता उनके पास रहेगी।
- **ऐसे ही ख़ुशियों से हम अपने खजाने भरते चलें**, कैसे मिलेगी ख़ुशी? रहती है माताएं खुश या नहीं? सभी खुश नहीं रहते है।

चेहरे बता रहे है सभी खुश नहीं रहते है दुसरो का व्यवहार, अपने ही वचार, अपना ही अनुमान ख़ुशी को छिनता रहता है। हमारी एक अलोकिक ख़ुशी है यह वोह ख़ुशी नहीं है जो टीवी देखने से मिल जाती है, लोग सोचते है टीवी देखने से बड़ी ख़ुशी मिलती है वोह ख़ुशी तो कुछ भी नहीं है। अलोकिक ख़ुशी जो हमारे अपने अनुभव और चिंतन से प्राप्त हो, जो श्रेस्ठ कर्मो से प्राप्त हो, जो बाबा से योगयुक्त होने प्राप्त हो ऐसी ख़ुशी। तो एक संकल्प कर लें सभी एक छोटा सा संकल्प है **हमें वोह नहीं सोचना है जो हमारी ख़ुशी को छीन ले जाएँ** इतना ध्यान दें। ख़ुशी को छीन ने वाले बहोत संकल्प होते है, बहेनजी ने दूसरी माता को पूछ लिया मुझे तो पूछा ही नहीं सारा दिन ख़ुशी गायब। छोटी छोटी बातें है खाने में दुसरो कि थाली को देखते रहते है इसकी थाली में ज्यादा माल है हमारी में तो है ही नहीं, ब्रह्मा भोजन भूल गए ख़ुशी गायब। दुसरो को सोने के लिए अच्छा कमरा मिल गया हमें जनरल में सुला दिया ख़ुशी गायब, छोटी छोटी बातें

है। अपने को इतना महान बनाएं कि यह छोटी छोटी बातों के विचार हमारी ख़ुशी को नष्ट ना करें, खुश रहना है सोने को तो मिल गया ना? हो सकता है अच्छे कमरो में सोने वालों को तो नींद ही ना आ रही हो और आप खरांटी ले रहे हो सारी रात, हो सकता है ना? इसलिए ऐसा कोई भी संकल्प आने नहीं देना है जो ख़ुशी को हर ले जाएँ, ख़ुशी पर हमारा अपना अधिकार रहे तो चारो युग खुश रहेंगे हम। **जो भगवान् को पाकर ही खुश ना हुआ हो वोह किसे पाके खुश होगा?** जो अथाह खजाने, सम्पूर्ण ज्ञान, परमातम प्यार को पाकर ही खुश हुआ ना हो वोह भला कैसे खुश रहेगा। इसलिए जो कुछ हो रहा है उसमें संतुष्ट रहते हुए ख़ुशी पर अपना अधिकार रख लें सभी इस खजाने को सभी को बढ़ाते चलना है।
ऐसे ही जिन भिन्न भिन्न खजाने कि चर्चा कि है सभी उनपर ध्यान दें पुण्य कर्म, पवित्रता, दुआएं, श्रेस्ठ संकल्पो खजाना जो सभी से जुड़ गया है सभी खजानो से जुड़ गया है श्रेस्ठ संकल्पो का खजाना। जानते है सभी श्रेस्ठ संकल्प क्या है? में जब कभी कभी स्कूल में जाता हूँ तो टीचर्स भी होते है में जब उन्हें बताता हूँ कि अच्छे विचार आपके पास होने चाहिए। में पूछता हूँ अच्छे विचार सुनाएंगे? तो टीचर्स सहित लोगो को आता ही नहीं अच्छे विचार किसे कहते है, एक दो सुनाएं बस ख़त्म हो गया। श्रेस्ठ विचार कहाँ मिलेंगे हमें? कहाँ है आपके पास श्रेस्ठ विचारों का भण्डार? आपके पास है मुरलियों में, अव्यक्त मुरलियां विशेष रूप से। श्रेस्ठ संकल्पो का अथाह खजाना समाएं हुए है, सुंदर सुंदर विचार है उनमें उनकी स्टडी करें। अपने विचारों को अच्छा महान, श्रेस्ठ बेहद का बनाते चलें, छोटे विचार मनुष्य के लिए बड़े कष्टदाई होते है, विचारो का कई स्तर हो सकते है हमारे पास तो बहोत महान महान विचार भी है। इस संसार को साक्षी होकर देखो, सभी आत्माए अपना अपना पार्ट प्ले कर रही है, सब के पार्ट को देख कर आनंदित रहो, बहोत बड़े बड़े सुंदर विचार हमारे पास है।
इस तरह सभी खजाने जमा करते रहेंगे। में आपको याद दिला दूँ बाबा कि मुरली कि एक बात **तिन बिंदी लगाओं और खजाने बढ़ाओ।** बाबा के ही महावाक्य है यह, **तिन बिंदी सभी चिंतन करेंगे बाबा को कैसे यूज करें जो मन शांत रहे, ड्रामा को कैसे यूज करें जो मन शांत रहे, आत्मा का ज्ञान आत्मा बिंदी है उसमें कैसे स्थित हो जो मन शांत रहे।** फाइनली परिणाम स्वरुप हम समजलें जिसका मन जितना शांत है, जिसके मन में जितने सुंदर विचार है उसके ईश्वरीय खजाने उतने ही ज्यादा है। जब हम आत्मा बिंदी में स्थित हो जाते है तो हमारे सभी संकल्प आत्मिक स्वरुप में समाकर शांत होने लगते है, चित को शांत करने का यह बहोत सुंदर तरीका है। आप को बता दूँ किसी किसी को पास्ट कि बहोत याद आती है, पास्ट के अनेक चिंतन आत्मा को परेशान करते है यदि हम आत्मा हो जाएं, में आत्मा हूँ यह सोचने से काम नहीं चलेगा। में आत्मा इस शरीर से बिलकुल अलग हूँ थोड़ी देर के लिए आप यह संकल्प किया करें बहोत अच्छा संकल्प है बिलकुल अंतिम समय का सीन एमर्ज करें सब कुछ समाप्त हो गया रेह गयी में निराकार आत्मा। जैसे ही आप इस स्वरुप में आयेंगे पास्ट का सारा ही चिंतन इस निराकारी स्वरुप में समां कर लोप हो जाएगा। जितनी बार आप इसका अभ्यास करेंगे आप पाएंगे जो बीत गया उसका प्रभाव तेजी से समाप्त होने लगा, वोह प्रभाव हिन् हो गयी बातें, जो बातें आजतक आपको भरी लगती थी वोह सरल लगने लगेगी।
तो यह तिन बिंदीओं का प्रयोग करते हुए सभी खजाने बढ़ाएंगे फिर लास्ट में आपको वोह बात याद दिला देता हूँ सभी अपने से बातें करेंगे प्रभु मिलन के दिन कैसे बीत रहे है?

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ बाबा ने यह याद दिलाया तुम विशेष आत्माएं कल्प वृक्ष कि जड़ो में बैठे हुए सभी धर्मो कि आत्माओ के पूर्वज हो, पालन करने वाले हो ।
- ✓ भगवान् को भी यह पसंद नहीं कि मेरे बच्चे और साधारण रेह जाएँ, मेरे बच्चे और शांति कि तलाश में इधर उधर घूमने लगे, वोह चाहता है कि मेरे बच्चे दाता बन जाएँ। इतने संपन्न हो जाएँ, इतने भरपूर हो जाएँ कि सारे संसार को देने वाले हो तब तो उसको भी गर्व होगा ना?
- ✓ तुम बाबा के गले कि माला के ऐसे मनके हो जिनकी याद से अनेक भक्तो कि समस्याएं भी दूर हो जाती है।
- ✓ हम अभी से अपने और दूसरे के विघ्नो को हरने के अनुभव करें, अभी से शुरू करें ताकि हमें अपने में भी विश्वास हो जाए कि हम दृस्टि देकर, हम संकल्प करके, हम सकास देकर दुसरो को विघ्नो से मुक्त कर सकते है ।
- ✓ तिन खाते खोलने है अपने श्रेस्ठ पुरुषार्थ का खाता, दूसरा खाता दुआओं का खाता, तीसरा खाता पुण्य कर्मो का खाता।
- ✓ अगर हमें संगमयुग पर संतुष्ट होना है तो तपस्या करनी ही पड़ेगी।
- ✓ तुम्हारी स्थिति श्रेस्ठ होगी तो परिस्थियां स्वतः ही बदल जायेगी।
- ✓ अपने को दृढ़ कर दें कि हमें करना है, हम नहीं करेंगे तो क्या वोह भक्त करेंगे जिन्हे कुछ भी पता नहीं है?
- ✓ जिसके पास दुआओं का खाता जमा है उसके जीवन में यदि समस्यायों के पहाड़ भी गिर जाएँ तो उन्हें चोट नहीं लगती सहज समाप्त हो जाती है।
- ✓ हम जानते है यदि भक्ति ना होती तो संसार वीरान बन जाता है, जंगल बन जाता है पूरा, भक्ति ने बहोत कुछ सिखाया है मनुष्य को पाप कर्मो से बचाया है, अशांत व्यक्ति को शांति दी सुख दिया।
- ✓ किसी ने तन सेवा कि हो या धन से सेवा कि हो लेकिन सेवा करने के साथ कोई कामना रही हो मेरा नाम हो जाएँ, लोग मुझे सब जान जाएँ इस स्वार्थ से पुण्य नष्ट हो जाता है। बेहद कि वृति नहीं रखी सेवाओं में यह मेरा है, मेरेपन कि वृति से सेवा कि तो भी पुण्य नष्ट हो जाता है।
- ✓ में को स्वमान में बदल दें, मेरे को तेरे में बदल दें सिर्फ कहने से काम नहीं होता बहोत सूक्ष्म फिलिंग हो जाएँ हमें सब कुछ तेरा ।
- ✓ इन खजानो का प्रभाव पुरे ८४ जन्मो पर रहेगा। पहले दो युग यहाँ के पुरुषार्थ कि प्रारब्ध हमें मिलेगी बाद के दो युग यहीं संस्कार जो हमने यहाँ बना लिया है प्रैक्टिकल में चलते रहेंगे।
- ✓ संगमयुग पर जिस आत्मा ने अपने चित को शांत कर लिया वोह सब से अधिक बुद्धिमान और जिनका चित उखड़ता रहा, चिड़चिड़ापन रहा, दुसरो को देखने में रहा, यह ऐसा कर रहे है इन्होने मेरे से ऐसा किया, इन्होने मुझे ऐसे किया इन्होने मुझे बहोत दुःख दिया, इन्होने मुझे बहोत तंग किया है वोह सब इस संगमयुग के काल को भी दुखो में व्यतीत कर रहे है।
- ✓ जिसने ज्ञान धन बहोत दान किया है उसे स्थूल धन कि कोई कमी नहीं रहेगी। जिसके पास ज्ञान धन बहोत है उसे स्थूल धन कमाने में मेहनत नहीं लगती।
- ✓ जिसने भगवान् से बहोत प्यार किया उसे जन्म जन्म प्यार मिलेगा, जिसने उसकी रचना से प्यार किया, सभी आत्माओ से प्यार किया उससे जन्म जन्म सम्बन्धो में प्यार प्राप्त होगा।
- ✓ हमें वोह नहीं सोचना है जो हमारी ख़ुशी को छीन ले जाएँ ।
- ✓ जो भगवान् को पाकर ही खुश ना हुआ हो वोह किसे पाके खुश होगा?
- ✓ तिन बिंदी लगाओं और खजाने बढ़ाओ। तिन बिंदी सभी चिंतन करेंगे बाबा को कैसे यूज करें जो मन शांत रहे, ड्रामा को कैसे यूज करें जो मन शांत रहे, आत्मा का ज्ञान आत्मा बिंदी है उसमें कैसे स्थित हो जो मन शांत रहे।